International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 13-04-2019; Accepted: 17-05-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 4; July 2019; Page No. 20-25

महायोगी गोरखनाथ जी धार्मिक आन्दोलन के अग्रदूत

सीमा सिंह, प्रेम सुमन शर्मा
हिन्दी विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय लखनऊ उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

प्राचीन काल से लेकर आजतक भारत की पवित्र भूमि में विविध धर्मो के संगम ने जिस चिन्तन धारा और अध्यात्मिक शक्ति से अभिसिंचित कर पल्लवित पुष्पित और फलीभूत किया। वह मध्ययुग में मुस्लिम और विदेशी आक्रमणों से भारतीय धर्म और संस्कृति को भारी क्षति हुयी। हर्षवर्धन के बाद से लेकर मुसलमानों के आक्रमणों तक का समस्त समय या तो खण्ड रुप में देखा गया या बहुत अस्पष्ट रुप में, नाथों के साहित्य में वस्तुत: इसमें सम्बन्धित अनेक संकेत भरे पड़े है। समाज में स्वेच्छाचार अमर्यादित जीवन अतिवदिता सिध्दान्तों और या कथित उच्च साधनाओं की आड़ में भोग को योग घोषित करने की प्रवृत्ति, अनाधिकारियों के प्रवेश भोग विलास की अति आडम्बर, अनावश्यक संग्रह आदि विभिन्न प्रवित्तियों का प्राबल्य था। कृच्छ्चार और सलज भोग को योग का जामा पहनाया जा रहा था। योग के प्रति धारणा गिरती जा रही थी। आडम्बर और अन्धविश्वास बढ़ रहा था। अत: बज्रसाधकों और अनुशासित जीवन का मार्ग गोरखनाथ ने ढूढ़ निकाला, जिससे शुध्द शरीर, शुध्दाचार सात्विक और कर्मठ एवं अनुशासित जीवन का यथार्थ रुप सामने आया।

यह नाथ सम्प्रदाय द्वारा धर्म क्षेत्र का सबसे बड़ा आन्दोलन था। गोरखनाथ योगधर्म ही था जो भक्ति आन्दोलन से पूर्व सबसे शक्तिशाली धार्मिक आन्दोलन था। ऐसी कोई भाषा नहीं जिसमें गोरखनाथ की कहानी न पायी जाती है, उन्होंने जिस धातु को छुआ वही सोना हो गया गोरखनाथ का व्यक्तित्व इतना विशाल और प्रभावशाली था कि उनके सैकड़ों साल बाद भी भक्त कवियों पर उनका प्रभाव देखा जाता है, भारतीय धर्म साधना एंव धार्मिक आन्दोलन के इतिहास में गोरखनाथ के नाथ सम्प्रदाय का महत्वपूर्ण स्थान है। समाज को देखो तो गुरु गोरखनाथ लोगों के चित्त के बहुत निकट है, निरक्षर हिन्दी भाषी भी गोरखनाथ के दोहे और सबदी से वाकिफ है।

“सामान्यत: देखा जाय तो महायोगी गोरखनाथ जी इस्लाम और हिन्दुत्व के प्रचलित स्वरुप को नकारा है उन्होंने इस प्रकार की धार्मिक आस्मिता को निर्मित करने की कोशिश की जिसमें एक साथ हिन्दू और मुस्लिम रह सके। ऐसा करने के लिए उन्हें हिन्दू और मुस्लिमान की धार्मिक श्रेणियों को मानना पड़ा, साथ ही इन श्रेणियों से ऊपर जाने की कोशिश की।” [1]

“गोरखबानी के एक और पद में धार्मिक सीमा को लांघने के लिए कुछ अलग तर्क का सहारा लिया गया है। सबदी 182 में देख सकते है कि-

> दरवेश सोई जो दर की जाणैं, पंच पवन अनूठा आणे।
> सदा सुचेत रहे दिन राति, सो दरवेष अलह की जाति।।” [2]

“गोरखबानी के पदों में धार्मिक कर्मकाण्डों के

सम्बन्ध में हिन्दू और मुसलमानों के परम्पराओं को अस्वीकार किया गया है और एक अलग श्रेष्ठ योग परम्परा के समर्थन में भी है-
हिन्दू ध्यावै देहुरा मुसलमान मसीत जोगी ध्यावै परपद जहा देहुरा न मसित।" [3]

"भारतीय धर्म साधना में योग मार्ग के उन्नायक महायोगी गोरखनाथ व्यक्तित्व अप्रतिम है। वे युग-प्रवाह को मोडने वाले,परिस्थितियों को अपनें अनुकूल बनाने वाले, परम्परागत विचार प्रवाह को मथकर उसके भीतर से सर्वयुगीन तत्व को प्रकट करने वाले साधक और विचारक थे। महायोगी गोरखनाथ द्वारा तत्कालिक सामाजिक, धार्मिक जीवन से नाथपन्थ का प्रवर्तक एक नई क्रान्ति का उद्घोष भारत के स्वतन्त्र समाजिक-धार्मिक जीवन को नाथपन्थ का प्रवर्तक एक नयी क्रान्ति का उद्घोष भारत के स्वतन्त्र सामाजिक-धार्मिक जीवन को न्यायपन्थ ने नवीन प्रवाह प्रदान किया। श्री गोरखनाथ ने अपने स्पष्ट और अनावृत्त व्यवहार तथा योग मार्ग द्वारा तत्कालीन समाज को वह दिशा प्रदान की जिसमें सदाचार की प्रतिष्ठा के साथ ऊचनीच की भावना, कर्मकाण्ड और पाखण्ड का कोई स्थान नहीं था। उनका योगमार्ग इन्द्रिय निग्रह और सदाचार सच्चरिता और जीवन की पवित्रता का उद्घोषक था।" [4]

"इसलिए सगुण भक्ति के महान कवि गोस्वामी तुलसी दास को कहना पड़ा-
"गोरख जगायो जोगु, भक्ति भगायो लोगु।"

"गुरू गोरखनाथ यदि ना होते तो संत साहित्य का शायद प्रस्फुटन ही नहीं होता, क्योंकि सन्त साहित्य का अधिकांश बीज गोरखनाथ की साधना पद्धतियों में भरा हुआ है। गोरखनाथ के साहित्य में ईश्वरोपासना के बाह्य विधानों के प्रति उपेक्षा प्रकटकी गयी है, घट के भीतर ही ईश्वर की प्रप्ति पर जोर दिया गया है, वेदशास्त्रों के अध्ययन को व्यर्थ ठहराकर पण्डितों के प्रति अश्रध्दा प्रकट की गयी है, तीर्थटन आदि निष्फल कहे गये है। ये सारी बातें सम्पूर्ण भक्ति काव्य पर परिलक्षित है, लेकिन संत मत और विशेष रुप से कबीर पर उनका गहरा प्रभाव दिखाई पड़ता है। कतिपय प्रसंगों और उनकी अभिव्यक्ति में तो गोरखनाथ और कबीर में अद्भुत साम्य दिखाई पड़ता है-

यह मन सकती, यहु मन सीव यहु मन लै जौ उन्मान रहै, तो तीन लोक की वातां कहै।" [5]

"गोरखनाथ जी का लक्ष्य ही था कि समाज निर्वेद समरस और सुखी बने, आत्म तत्व का बोध सबमें हो नाथपन्थी योगी साधना द्वारा सात्विक, अध्यात्मिक जीवन का आदर्श बने और सर्वसमाज, सज्जन, सन्तोषी, संयमी,स्नेहीशील अपरिग्रही और समभावयुक्त बने। इस उदात्त लक्ष्य की प्राप्ति गोरखनाथ और नाथयोगी को हुई थी भारतीय अध्यात्म चिन्तन को यही गोरखनाथ जी की बड़ी देन है।" [6]

"हिन्दी संत साहित्य पूरा का पूरा युग गोरखनाथ साधना पद्धति से प्रभावित दिखता है, वही साधना वही साधनमार्ग की शब्दावली वही सात्विक नैतिक जीवनदर्श, सब कुछ वही है, कबीर और उनकी परम्परा पृथक राजस्थान की मीरा तक गुरू गोरखनाथ और नाथ परम्परा से प्रभावित दिखती है।" [7]

"सन्त और भक्त कवि तो भारतीय परम्परा से आये थे। भारत के बाहर से आये सूफी आन्दोलन पर भी गोरखनाथ जी का व्यापक प्रभाव परिलिखित होता है सूफी कवियों में योगी को अपनी साधना के अंग के रूप में स्वीकार किया, य़द्धपि उनका अन्तिम लक्ष्य प्रेम साधना है। जायसी के पद्मावत् से लेकर मंझम कृत मधुमालती कुतुबन कृत मृगावती, उस्मान कृत

चित्रावली, नूरमुहम्मद कृत अनुराग बांसुरी सभी के नायक, योगी बनकर निकलते है वेश भी नाथ योगी का धारण करते है, और साधना मार्ग भी वही रखते है। इसके मूल मे कारण यह लगता है कि जब सूफी सन्त बाहर से भारत में आये तो लोक में उन्हे अपने मत का प्रचार करने के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा योगियों से हुई। उनका विरोध उनके वेश का नहीं था। अतः उन्ही के तथ्यों और तत्वों अपने प्रेम मार्ग के साथ जोड़कर अपने पन्थ के प्रचार में सभी सूफी सन्त जुटे था।" [8]

"नाथ साधना के अन्तर्गत नाथपन्थी साधको ने प्रणायाम को विशेष महत्व दिया है, सूफियों ने भी प्रणायाम की महत्ता को समझा है और स्वीकारा है, कबीर जायसी का यह कथन ध्यान देने योग्य है-

सा सासां जो लहि दिन चारी, अकुर से करि लेहु चिन्हारी।
अध न रहबु होहु दिठियारा, चीन्हि लेहे जोहि कोटि संवारा।
सबै बैठहु वज्रासन मारी, गहि सुखमना पिंगना नारी।" [9]

काजी मुल्ला पण्डित पुजारी जनसामान्य को भ्रम मे डाले हुये भटका रहे है।-

काजी मुल्ला पुराण लगाया वेद।
कापणी सन्यासी तीरथ भ्रमाया ना पाया निवाण पद न भेंद।।
पण्डित शास्त्रार्थ करते हये सूझते जा रहे है- तत्व सूझता नहीं-
पण्डित ज्ञान करौ का सूझि और लेइ परम् पद बूझि।

पण्डित शास्त्रज्ञ दंभ से हुये सामान्य लोकजीवन का शोषण कर रहे है। मन में शास्त्र ठूसा हुआ है। पेट खाली है। शास्त्र इन खाली पेट की पूर्ति का साधन है-

संग का पूरा ज्ञान का उरा, पेट का लूटा डिम्ब का सूरा।

गोरखनाथ इसी युग में प्रकट हुये उस समय जनता में कोई आदर्श नहीं जिन्हें चातक-दृष्टि देख रहा था, वे निरे दम्भी, आचरणहीन मदिरा, धतूरा, अफीम एंव भांग भकोसने वाले नाना प्रकार की विषय वासनाओं में निम्ग्न राक्षसी प्रवृति के शिकार बने हुये था वासना में इनकी शरीर सीझ रही है। भोग इन्हें खाये जा रहा है।-

चामै चाम घिसता लोई, दिन दिन दीजै काया।
आपा परच गुरू मुषि न चीन्हे, फाड़ि बाधिनी खाया।।
बधिनी उपाया, बधिनी निपाया, बधिनी पलि काया।
बधिनी डाकरै जोरियौ पाखरै, अनुभई गोरखाया।।

पण्डित और भांड़ जीविकोपार्जन के लिए एक जैसा आचरण कर रहे है। विप्र अनपढ़ है और योगी गृहस्थ आश्रम में फसा हुआ है, पत्नी मरी कि व्यक्ति योगी हो गया। वैराग्य के और कई बहाने है-

रांड मुआ जती, धाये भोजन सली, धन त्यागी।
नाथ कहै, ये तीनों अभागी।।

नाना प्रकार की वासनाओं और रुढ़ियों में लिप्त ज्ञानियों को चुनौती देते हुए गोरखनाथ कहते है-

पढ़ि पढ़ि पढ़ि केता मुआ, कथि कथि कथि कहा कीन्ह।
बढ़ि बढ़ि बढ़ि बहुघटि भाया, परब्रम्हा नहीं चीन्ह।। [10]

गोरखनाथ नवी शती के उदार चेता, कर्मठ संगठनकर्ता समाजोद्धारक लोकरक्षक, योगसाधना के विशिष्ट पुरस्कर्ता महासिद्ध थे। बैद्धों और शैवों में ही नहीं, सकों और कापालिकों में तथा भोटिया साहित्य में भी इनकी महानता स्वीकृत है। भारत के सुदूरवर्ती क्षेत्रों तक का यात्रा करके उन्होनें शैवों का संगठन ही नहीं किया अपितु दलित पीड़ित और उपेक्षित जनसमाज का उद्धार भी किया। साथ ही मानवता का संदेश देकर तत्कालीन समाज को स्वस्थ सबल चारित्रिक आदर्श के मार्ग पर अग्रसर किया जिस पर चलने के लेये सभी वर्गों एंव धर्मो के अनुयायी के लिए द्वार उन्मुक्त था। निःसंदेह तत्कालीन भारतीय समाज के महान धार्मिक, साधनात्मक और चिन्तक मनीषी के रुप में शंकराचार्य के बाद गोरखनाथ का नाम लिया जाता है। [11]

धार्मिक बिरादरी से बाहर निकलकर व्यापक भारतीय समाज को देखें तो- गुरु गोरखनाथ, कबीर व अन्य भक्ति कवि आज भी लोगों के चित्त के निकट हिन्दी समाज के रोजमर्रा की जिन्दगी में किसी अन्य कवियों से अधिक उपस्थित है। निरक्षर निरक्षर भाषी भी गोरखनाथ व कबीर के सबदी व दोहे से वाकिफ है। भक्त कवियों के विस्मयजनक व्याख्याये कर श्रोताओं को चकित कर देने वाले गाँव-गाँव मे मिल जाते है।

गोरखनाथ का प्रभाव आँकने के लिए केवल विभिन्न भाषाओं का साहित्य ही प्रर्याप्त नहीं है, बल्कि लोकसाहित्य को भी खंगालनें की आवश्यक्ता है। लोक साहित्य प्राय़ः चारों रुपों लोकगीत, लोकगाथा तथा लोककृतियों में मिलता है। इन चारों रुपों मेंल गोरखनाथ जी के प्रभाव को अंकित करने वाले साहित्य को संग्रहित किया जाना चाहिए। लोकगाथाओं जैसे- आल्हा आदि में भी गोरखनाथ जी उल्लेख मिलता है। गोरखनाथ, भरथरी और गोपीचन्द की कथाऐं प्रायः लोककथाओं के रुप में गायी जाती है। गेरुआ वस्त्र, सारंगी पर इन कथाओं का गाते हुऐ जोगियों को उत्तर भारत में देखा जा सकता है। भरथरी और गोपीचन्द की कथाएँ अत्यन्त संवेदनशील एवं करुणिक है। गोपीचन्द से सम्बन्धित लोकगाथा के एक अंस को यहाँ उद्दत किया जा रहा है, जो जोगी लोग प्रायः गा कर भिक्षाटन करते है। ये गाथाए प्रायः संवाद शैली मे है-

माँ गोपी चन्द से पूछती है कि किस कारण से रे गोपीचन्द हाथ में तुम्बी लिया और किस कारण हाथ में सोटा-

केकरे करनवा ए गोपीचन्द हाथ लिहैल तुम्बवा,
केकरे कारण हाथ में सोटा राम।

इस प्रकार गोपीचन्द उत्तर देते है कि हे माँ मैने तुम पर हाथ में तुम्बी लिया और कुत्तों को भगाने के लुए हाथ में सोटा।-

तोहरे पर लिहलीं ए मैया हाथ केर तुम्बवा।
कुकुरा मारनवे हाथ सोंटा हो राम।।

यह गोपीचन्द गाथा को थोड़ा सा अंश है। योगियों के अवदान को रेखामकित करने के लिए निरन्तर शोध की आवश्यक्ता है। [12]

गोरखनाथ के महान व्यक्तित्व ने सबको एक साथ आकर्षित किया।शंकर के पश्चात् दूसरा महान व्यक्ति- जिसने उत्तरी भारत को सबसे अधिक प्रभावित किया, जिसने सुधार प्रवृत्ति से वाम मार्ग और ब्राम्हजवाद के विरुद्ध अपनी एक विशिष्ट परम्परा स्थापित कर जनता को चमत्कृत किया, वह नाथपन्थ का सबल प्रचारक गोरखनाथ ही था। योग और दर्शन का गोरक्ष ने बड़ा सुन्दर समन्वय किया। इनकी विचारधारा साधना पक्ष पर ही आधारित है। योगी सम्प्रदाय के दर्शन का आधार पूर्णनाथ या अवधूत योगी का अनुभव है। सच्चे नाथ या अवधूत योगीगोरखनाथ ने अपनी

निजी एवं अपने से पूर्व होने वाले नाथपंथियों का अध्यात्मिक अनुभूतियों के आधार पर ही अपने दार्शनिक सिद्धान्तों की स्थापना की है। [13]

वह निराशावाद जनित योग वैराग्य से लोगों को पीछा छुड़ाना चाहते थे और उन्होंनें मरने के पीछे मिलने वाले निर्णय के पीछे भागने वाले लोगों के लिए इसी संसार में स्वाभाविक योगमय जीवन बिताने का आदर्श उपस्थित किया। [14]

नाथों में निजता की बहुलता है जीव और जगत के लिए सहजमार्ग को इन नाथों नें ढूढ़ा इन लोगों को अपने पर अधिक विश्वास था। अतः इसी पर सबको चलाने का प्रयास किया है। एक साधारण व्यक्ति के अनुभव और परमार्थी दर्शी के अनुभव को मिलाने का काम इन नाथों ने किया। नाथों के नेता गोरक्षनाथ का व्यक्तित्व इतना उदार और सारग्राही है, कि इसमें उदात्त, सगुण, निर्गुण, वाम, दक्षिण, योगी, ज्ञानी और भक्त सभी सुख की सांस लेते आ रहे है। परम् तत्व सबक् द्वारा अज्ञेय ही है। नाथों ने स्वर्ग की उड़ान ली न पृथ्वी का भोग। इन्होने न हिन्दुओं का बैकुण्ठ देखा न मुसलमानों का देखा। नैतिकता के आधार पर केवल सहज मार्ग का इन लोगों ने प्रवर्तन किया। असंगत पर नाथों नें तीखी प्रतिक्रिया भी व्यक्त की है। अतिरेक का भी यहा सर्वत्र विरोध है। नाथ विरक्त एंव ब्रम्हचारी होता है। या सबसे पहले एक साधक होता है- फिर कुछ और। मानव के सर्वांगीण विकास की बातें नाथ सिद्धों का रचनाओं में मिलती है। [15]

अध्यात्म के बिना मनुष्य के क्रिया- कलापों में नैतिक्ता को समावेश न हो सकता, अगर ऐसा न हो सका तो जो आज की परिस्थितियाँ है, उनका कोई समाधान न हो सकेगा। आज की परिस्थितियाँ भी उलझती चली जायेंगी और मनुष्य हैरान होता चला जायेगा, इन हैरानियों को और कोइ समाधान नहीं है। [16]

शिक्षा प्रवृत्ति समग्र विकाश की अवधारणा पर आधारित विद्धालय व विश्वविद्धालय के विकाश में आध्यात्मिक गुरुओं जैसे ऋषिमुनियों का सानिध्य आवश्यक है। आध्यात्मिक शिक्षा के बिना मनुष्य की नैतिक आवश्यक्ताए पूरी नहीं हो सकेगी।

जैसे-जैसे नाथ सम्प्रदाय के विस्तार और प्रभाव की जानकारी प्राप्त होती जा रही है, वैसे-वैसे इसका साधारण सहत्व भी स्पष्ट होता जा रहा है। भारतीय धर्म साधना के इतिहास मे नाथ सम्प्रदाय का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। भक्ति आन्दोलन के पूर्व यह महत्वपूर्ण धार्मिक आन्दोलन रहा है। आधुनिक भारतीय भाषाओँ में से प्रायः सबके साहित्य प्रयत्नों की पृष्ठभूमि में इसका प्रभाव सक्रिय रहा आधुनिक भारतीय भाषाओँ के साहित्य की प्रेरक शक्तियों का अध्ययन इस सम्प्रदाय के अध्ययन के बिना अधूरा रह जायेगा। [17]

वर्तमान में गोरखनाथ योगमार्ग के प्रासांगिक्ता को विचार को बड़ा शोर है, अतिभौतिकवाद के आड़ में मानव का चारित्रिक मेरुदण्ड टूट ना जाये, समग्र भारतीय समाज का ओज प्रवाही स्नायुजल छिन्न-भिन्न न हो जाये और अर्थ का अनुगामी और सम्पूर्ण जीवन शक्ति धारा को उसकी ओजप्रवाहित करने का मार्ग महागुरू गोरखनाथ की कृतियों का अमूल्य योगदान है।

सन्दर्भ

1. निर्गुण सन्तों के स्वप्न, डेविड एन लारेंजन, पृ0- 28
2. निर्गुण सन्तों के स्वप्न, डेविड एन लारेंजन, पृ0- 30
3. निर्गुण सन्तों के स्वप्न, डेविड एन लारेंजन पृ0- 30
4. योग एवं महायोगी गोरखनाथ, महन्त योगी आदित्यनाथ, पृ0- 11
5. योग एवं महायोगी गोरखनाथ, महन्त योगी आदित्यनाथ, पृ0- 45

6. योग एवं महायोगी गोरखनाथ, महन्त योगी आदित्यनाथ, पृ0- 47
7. योग एवं महायोगी गोरखनाथ, महन्त योगी आदित्यनाथ, पृ0- 47
8. योग एवं महायोगी गोरखनाथ, महन्त योगी आदित्यनाथ, पृ0- 47-48
9. योग एवं महायोगी गोरखनाथ, महन्त योगी आदित्यनाथ, पृ0- 49
10. नाथ साहित्य, परम्परा और प्रदेय, विनय प्रकाश राय पृ0- 186
11. योग एवं महायोगी गोरखनाथ, महन्त योगी आदित्यनाथ, पृ0- 44
12. योग एवं महायोगी गोरखनाथ, महन्त योगी आदित्यनाथ, पृ0- 43
13. नाथ सिध्दो का तातकालिक विश्लेषण, डा0 अनुज प्रताप सिंह, पृ0- 144
14. नाथ सिध्दो का तातकालिक विश्लेषण, डा0 अनुज प्रताप सिंह, पृ0- 144
15. नाथ सिध्दो का तातकालिक विश्लेषण, डा0 अनुज प्रताप सिंह, पृ0- 148
16. आध्यात्म को जीवंत बनाए, आचार्य श्री राम शर्मा पृ0- 16
17. नाथ सम्प्रदाय, हजारी प्रसाद दिवेदी पृ0-